बंगाल की लोककला में अल्पना का महत्व

डॉ0 दिशा दिनेश

असि0प्रोफे0, चित्रकला विभाग

इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 दिशा दिनेश,

बंगाल की लोककला में अल्पना का महत्व,

Artistic Narration 2018, Vol. IX, No.2, pp.45-50

http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

लोककला, जन मानस की कला, साधारण जन की कला। ऐसी कला जो सीधे–सादे लोगों की अभिव्यक्ति है, आंतरिक सौन्दर्य का सरलतम रूप है। भारतीय समाज में कोई भी दिन हो–लोककला किसी न किसी रूप में हमें अवश्य ही दिखायी देगी। बंगाल के हर परिवार में अल्पना का निजी महत्व है। इन कलाओं की जन्मदात्री नारी–समाज है। इस कला के पीछे पैसे का मोह नहीं है, वरन अपनी आत्मभिव्यक्ति और सज्जा के प्रति झुकाव इसका मूल कारण है। जिससे कल्पना और धार्मिक भावना से समन्वय के साथ सुन्दर रूप प्रदान किया जाता है। समय के साथ–साथ अल्पना के डिजाइन एवं उपयोगिता में भी बदलाव आया है। आधुनिक समय में विभिन्न कार्यक्रमों, आर्ट गैलरी के मुर्हूत, शादी–विवाह अथवा बच्चे से सम्बन्धित उत्सवों में अल्पना बनायी जाती है।

डॉ0 दिशा दिनेश

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक काल के अवलोकन मात्र से यह विदित होता है कि मानव में कलात्मक प्रवृत्ति का उद्‌भव और विकास, स्वयं मानव जीवन के उद्‌भव और विकास के साथ–साथ निरन्तर प्रगतिशील रहा है। जिस समय मानव गुफाओं के भीतर रहता था, उसी समय से कला के प्रति उसका झुकाव हमें पूर्व में देखने से प्रतीत होता है। मानव की यह कलात्मक प्रतिभा वहाँ की दिवारों पर मिले चित्रों को देखने से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। कलात्मक प्रतिभा मानव में जन्म से ही उद्‌भव हो चुकी थी। इसी प्रकार मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के बर्तनों पर अंकित आलेखन भी हमारी प्राचीन अलंकरण कला परम्परा के ही प्रमाण है। कला के यह सशक्त प्रमाण आज भी कलाप्रेमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किये हुये हैं। कला का यह विकास ठीक उसी प्रकार आगे बढ़ा जैसे कि मानव क्रम का विकास बढ़ा इसी के चलते धार्मिक तथा जातिगत परम्पराओं ने भी इन कलाओं पर अपना बहुत अधिक प्रभाव डाला। सजावट की यह प्रवृत्ति धीरे–धीरे हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गई तथा परिवार, समाज तथा धार्मिक बन्धनों के प्रभावों के अनुरूप निरन्तर प्रगति करती रही। विभिन्न पर्वों, ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, मांगलिक आदि कार्यों में विभिन्न प्रकार की लोककलाओं की अपनी महत्ता रही है।

कला के क्षेत्र में बंगाल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व अपनी अनूठी पहचान रखता है बंगाल की लोककला परम्परा अति प्राचीन रही है जिसकी निरन्तरता आज भी विद्यमान है इस कला को जीवित रखने में सुदूर गाँवों में रहने वाले सरल, साधारण ग्रामीण लोगों का विशेष योगदान है तथा उनके आंतरित सौन्दर्य को परिलक्षित करता है जिसमें न बन्धन होता है और न ही दिखावटीपन। लोककला जीवन के विभिन्न पहलुओं से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ी है। इस कला पर न किसी काल का प्रभाव रहा और न ही किसी के आश्रय में इस कला का जन्म हुआ। इसके लिए न किसी स्कूल की जरूरत हुई और न किसी प्रशिक्षण की, क्योंकि वह इस लोक की धरोहर है। यह पुरातन काल से पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर चलती आई है। साधारण जनमानस ने उसे अपना प्रेम देकर निष्ठा के साथ सशक्त बनाया और उसका अलग महत्व जनमानस के समक्ष रख। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि लोककला जन–सामान्य, विशेषतया जन समुदाय की सामूहिक अनुभूति की अभिव्यक्ति है।[1] यह कला धार्मिक भावनाओं तथा आध्यात्मिक अनुभवों पर विशेष रूप से प्रभावित रही है। साधारण जनमानस में प्रचलित रीतिरिवाजों और मान्यताओं को इसका आधार बनाया गया। यद्यपि इस कला का कोई लिखित ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है लेकिन यह व्यवाहरिक जीवन में अत्याधिक महत्व रखती है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होकर निरन्तर गतिशील रहती है। सामूहिक रूप से चलने वाली इस कला में परिवर्तन बहुत ही धीरे होता है। परन्तु इस कला का काल चक्र अनन्तकाल से सम्बन्धित रहा है। वैदिक काल से वर्तमान युग तक की सांस्कृतिक भावना, धारणा, परम्परा, रूढ़ि, आत्मा, विचार आदि की क्रमबद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लोककला में ही देखने को मिलती है।

लोककला स्वछन्द प्रवृत्ति का स्वाभाविक चित्रण है जो कि सहज रूप से मानव की अनुभूतियों का प्रतिनिधित्व करती है। लोककला एक सामूहिक कला है, मुख्य रूप से ग्रामीण जन की कला। लोककला में स्वाभाविकता की गहनतम छाप होती है, यह कला प्रयोगात्मक कला नहीं है अपितु अपनी धार्मिक धारणाओं तथा संस्कृति पर आधारित कला है इसमें विषयों का चित्रण अत्यन्त सरल एवं जीवन

के निकट होता है। इस कला का सम्बन्ध मनुष्य के भीतर विद्यमान तत्वों से होता है उसी के अनुरूप कलाकार अपनी कला को प्रदर्शित करता है इसी कारण कलाकार का इस कला से अटूट सम्बन्ध रहा है। आस्था और बोध ये दो तत्व ऐसे है जिससे मनुष्य अपने भीतर की आत्मा को पहचान सकता है और इसी के माध्यम से वह अपनी आत्माभिव्यक्ति को सबके समक्ष प्रस्तुत करता है। जो मनुष्य के भीतर प्रारम्भिक काल से ही पाये जाते हैं।

एक आस्था और विश्वास ही दो मुख्य कारण होते हैं जिनसे मनुष्य अपने भीतर के विचारों को अभिव्यक्त करता है। जब वह अपने भावों को व्यक्त करने हेतु कला का सहारा लेता है तब ये दोनों तत्व 'धर्म व सौन्दर्य' उसके माध्यम से व्यक्त होने लगते हैं और विभिन्न अवसरों पर यह कला प्रदर्शित होने लगती है यही कारण है कि यह हमारे दैनिक जीवन से इस प्रकार जुड़ गई है जैसे हमारी सांसे। लोककलाएं मनुष्य को मानसिक शान्ति प्रदान करती है। बिना किसी बनावट के सहज व सरल रूप से अपने भाव को व्यक्त करना ही लोक कलाकार की शैली है। कलाकार अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए पूर्णतया स्वतन्त्र रहता है तथा अपनी कल्पनाओं को अपनी व्यक्तिगत रूचि के अनुरूप सरल रूप प्रदान करता है भारतीय लोककला की परम्परा में बंगाल का स्थान सर्वोपरि है। जहाँ पर प्रत्येक घर में कला साक्ष्य विद्यमान है।

लोककला, जन मानस की कला, साधारण जन की कला। ऐसी कला जो सीधे–सादे लोगों की अभिव्यक्ति है, आंतरिक सौन्दर्य का सरलतम रूप है, जिसमें न कोई शास्त्रीय बंधन होता है न कोई बनावटीपन। लोककला सार्वभौमिक और सार्वकालिक है। जन–जीवन से प्रेरणा लेकर ही यह आगे बड़ी है। बंगाल की लोककला परम्परा अति प्राचीन है। 8वीं शताब्दी से 10वीं शताब्दी में पाल राज्यकाल से आरम्भ होकर 14वीं शताब्दी तक यह कला पूर्ण उन्नति को प्राप्त हुई।[2] लोककला हमारे दैनिक जीवन में इस प्रकार जुड़ी हुई है कि उसे अलग करके देख पाना अत्यन्त मुश्किल है। भारतीय समाज में कोई भी दिन हो–लोककला किसी न किसी रूप में हमें अवश्य ही दिखायी देगी। दीपावली, करवाचौथ, अहोई, नागपंचमी आदि धार्मिक अनुष्ठानों, तीज–त्यौहारों, शादी–विवाह, शिशु जन्म आदि उत्सवों पर अल्पना हर रूप में दिखायी देती है। इस प्रकार लोककला हमारी दैनिक दिनचर्या का ही अंग है।[3]

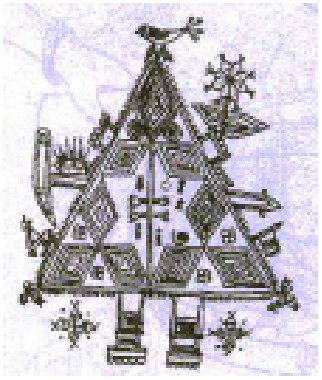

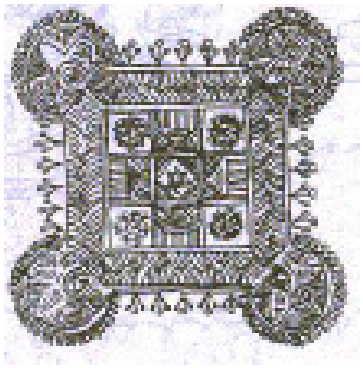

हमारे पर्व, धर्म और संस्कृति के साथ सभी कलाओं का अक्षय स्त्रोत जुड़ा है। न केवल व्यवहारिक स्तर पर अपितु लोक–जीवन के हर स्तर पर इसका परिचय प्राप्त होता है। अल्पना की कला इस दृष्टि से सर्वोपरि है। भूमि–अलंकरण की इस कला को पवित्रता का द्योतक माना गया है। इस कला की उत्पत्ति कब हुई, यह कोई नहीं जानता। प्राचीन काल से यह क्रम चला आ रहा है। वैदिक काल में पवित्र यज्ञ कुण्डों को चित्रित करने का उल्लेख मिलता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में भी मिट्टी के पात्रों पर अल्पना जैसे आलेखन मिलते हैं। वात्स्यायन के कामसूत्र में वर्णित चौसठ कलाओं में भी अल्पना का उल्लेख है। इस प्रकार अल्पना भारत की एक अति प्राचीन कला है। यह विश्वास किया जाता है कि इस कला का जन्म सुख–समृद्धि, धन–धान्य प्रदात्री माता को प्रसन्न करने के लिये हुआ होगा।[4]

पश्चिमी बंगाल के हर परिवार में अल्पना का निजी महत्व है। इन कलाओं की जन्मदात्री नारी–समाज है। इनमें पुरूषों का कोई हस्तक्षेप नहीं है और न ही किसी स्कूल में यह कला सिखायी जाती है, वरन् सभी माँ अपनी बेटियों को बचपन से ही इस कार्य में कुशल बनाती है और यह कला वंशागत चलती रहती है। इस कला के पीछे पैसे का मोह नहीं है, वरन अपनी आत्मभिव्यक्ति और सज्जा के प्रति झुकाव इसका मूल कारण है। जिससे कल्पना और धार्मिक भावना से समन्वय के साथ सुन्दर रूप प्रदान किया जाता है। विभिन्न उत्सवों में अल्पना का प्रयोग गृह–प्रवेश, नामकरण, विवाह आदि उत्सवों, अनाज की पैदावार, संतानों की रक्षा, सूखा पड़ने पर वर्षा के लिये किये गये सामूहिक अनुष्ठानों तथा धार्मिक अवसरों और व्रतों में होता है। इन अवसरों पर घर की सभी स्त्रियाँ एक होकर अल्पना बनाती है। अल्पनाएं पूजा–स्थान, घर के द्वार, दीवारों तथा पटरों आदि पर बनाई जाती है।

वैसे तो विभिन्न प्रान्तों में अल्पना की विधि और सामग्री भिन्न–भिन्न है। परन्तु बंगाल में चावल की अधिकता होने के कारण मुख्यतः चावल पीसकर अल्पना बनाई जाती है। पर प्राचीन काल में चावल के आटे से ही रंगोली बनाने के पीछे यह भावना प्रचलित थी कि इसको चींटी व गिलहरी आदि खा सकती है और इस तरह हमारा प्रातः काल दान से शुरू होता है। इसी धार्मिक विचार के अनुरूप पिसे हुए चावल के घोल में रूई डुबोकर अंगुलियों के बीच रखकर अंगूठे से इस प्रकार उसे हल्का दबाया जाता है कि घोल अंगुली से होकर बहता हुआ अंगुली की गति के अनुसार रूप धारण करता रहता है।

बंगाल के विभिन्न प्रान्तों में अल्पना में भिन्नता होना स्वाभाविक है। सबका मूल विषय एक होते हुए भी परम्परागत रूप से चलती हुई इन शैलियों में धीरे–धीरे परिवर्तन होता रहा है। भारत का राष्ट्रीय पुष्प कमल देशभर में विभिन्न रूपों में चित्रित किया जाता है। उसे यथार्थ रूप में बनाने का प्रयास न करके कलात्मक रूप दिया जाता है। कमल–पुष्प देवी–देवताओं के स्वर्गिक आसन के रूप में जाना जाता है। साथ ही यह जीवन और सौभाग्य का प्रतीक भी है। अतः नव दम्पत्ति के लिये पटरे पर बनाई जाने वाली कमलाकृति की अल्पनाओं में अनेक शुभकामनाएँ सन्निहित रहती है।[5]

विभिन्न व्रतों में बनाई जाने वाली अल्पनाओं में सूर्य, चन्द्रमा, नदी, वृक्ष आदि का प्रयोग या तो सरल रूप में होता है या प्रतीक रूप में। अल्पनाओं में प्रयोग होने वाले प्रतीकों में जातीय मेल रहता है और इनके आलेखनों में विविधता, नैपण्य और सौन्दर्यगुण। काले, सलेटी अथवा लाल फर्श पर बनी रेखा प्रधान इन अल्पनाओं की सुन्दरता गोल रेखाओं में होती है, जिसमें स्त्रियों की कुशल हस्तकला का साक्ष्य रूप झलकता है। अल्पना में मुख्य रूप से मछली, चिड़िया, पुष्प, सांप, शंख, सूर्य, चन्द्र आदि आकार बनाये जाते हैं जो कि प्रतीकात्मक होते हैं। दीपावली के शुभावसर पर लक्ष्मी के पैरों के निशान बनाये जाने का भी प्रचलन है। अल्पना में मुख्यतया, पीला, ओकर, रस्ट ब्राउन, सिन्दूरी लाल, पी–ग्रीन एवं लाल रंगों का प्रयोग किया जाता है।

समय के साथ–साथ अल्पना के डिजाइन एवं उपयोगिता में भी बदलाव आया है। आधुनिक समय में विभिन्न कार्यक्रमों, आर्ट गैलरी के मुर्हूत, शादी–विवाह अथवा बच्चे से सम्बन्धित उत्सवों में अल्पना बनायी जाती है। तूलिका की सहायता से पोस्टर रंग से अल्पना बनाने का प्रचलन भी हो गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बंगाल में अल्पना का एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसके बिना कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं होता है और आज इसका प्रचलन बंगाल में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में इसका प्रयोग प्रमुखता से किया जाने लगा है।

सन्दर्भ सूची

1. Jaya Appa Swamy, "*Folk art is Communal and a result of what may be called cumulative experience and cumulative originality*". Abanindra Nath Tagore and the Art of his Time'. The critical vision, Lalit Kala Academy, New Delhi, 1968, p.**78**
2. Bishnu Dey and John Irwin, '*The Folk Art of Bengal'*, Marg, Vol. 1, No. 4, P.**45**
3. Shanti Swaroop, *"They are essentially a part of our culture and very closely linked up*

with our religious and cultural development".-Arts and Crafts of India and Pakistan, Bombay, Tara porevala sons and Co., first edi, 1957, p. **86.**

4. Jamuna Nag, *"The art continues to exist as a ritual in every home which identifies alpona as representing the symbols of fertility, prosperity and unity"*.—'Kentha and other House hold Arts, The Art of Bengal and Eastern India, Kensington High Street, London.
5. Tapan Mahan chatterjee, "…….for it is in the secret depths of the artist's heart that these lotuses of the vision have had their birth, and it is there that they bloom ever fresh". – *'Alpana',* Calcutta Orient Longsman Limited, p-**3**.